हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन
का शीर्षक

डॉ॰ सविता चन्द्र पाठक

B.A. Part II Hindi Hons.

इसी कालखंड में प्रेमाख्यानक काव्य की भी रचना हो रही थी जिसे सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा के नाम से अभिहित किया जाता है। इसके प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी थे। इनके अतिरिक्त मंझन, कुतुबन इत्यादि अन्य कवियों ने भी इस धारा की समृद्धि में अपना योगदान दिया था। इस काव्यधारा की विशेषता थी कि इसकी रचना मसनवी शैली में हुई। इस काव्यधारा के समस्त कवि मुसलमान थे किन्तु सारी रचनाएँ हिन्दी

भाषा में लिखी गयी। यह काव्यधारा भारतीय
परम्परा से सर्वथा भिन्न हो गई। बल्कि सर्वथा उ
थी। भारतीय चिंतन परम्परा में ब्रह्म या ईश्वर
परम पुरुष माना गया है तथा जीवात्मा नारी रूप हो
परम पुरुष परमात्मा का संधान करती है। किन्तु सूफी
परम्परा में ब्रह्म को नारी के रूप में चित्रित किया
जबकि जीवात्मा पुरुष रूप में। यही जीवात्मा र
पुरुष उस ब्रह्मरूपी नारी के संधान में अनन्
एवं बाधाओं का सामना करता हुआ अन्ततः
नूर/सुन्दरी को प्राप्त करता है। इसी प्रकार इ
वर्णन शैली भी आकर्षणीय है। जैसे भारतीय परम्परा
नख शिख वर्णन की प्रधानता रही है, ~~[illegible]~~
मसनवी शैली में शिख-नख वर्णन की परम्परा

इन सूफी सन्तों ने अपने काव्य का
भारतीय लोक कथाओं से ही प्राप्त किया है। इनका
वर्णन इतना मर्मस्पर्शी एवं कौतुकपूर्ण है कि पाठक
रम सा जाता है और इन कथाओं से प्रभावित हुए बि
रह पाता। इनके काव्यों में जितने भी पात्र आए हैं स
लौकिक पात्र हैं। हां यह भी सत्य है कि वे सभी के
पात्र ऐतिहासिक हैं; वर्णित घटनाएं भी ऐतिहासिक
किन्तु उनका मूल उद्देश्य कुछ और है। ये सूफी
इन कथाओं के माध्यम से या अपने काव्यों के मा
माध्यम से हिन्दुओं को प्रभावित कर अपने पंथ
प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। इनका मूल
इस्लामी शासन को हिन्दुओं द्वारा ग्राह्य एवं स्वीकार
बनाना। इनका दूसरा उद्देश्य था- इश्क मजाजी से इ
हकीकी की प्राप्ति।

इनकी स्पष्ट मान्यता थी कि ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग है प्रेम। प्रेम का ही प्रभाव संपूर्ण सृष्टि में हुआ है जिससे प्रेमी जीवात्मा प्रभावित होकर परम के संधान में निकल पड़ता है और विघ्न-बाधाओं को झेलता हुआ उस परम प्रेमी को प्राप्त कर आनन्दित होता है।

सूफी कवियों ने अपनी काव्य-रचनाएं भारतीय परिवेश में की हैं। उन्होंने अरबी-फारसी के स्थान पर अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इनके द्वारा प्रयुक्त छन्द भी भारतीय हैं। भले ही इनके साहित्य का उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो किन्तु इन रचनाओं से हिन्दी साहित्य का कोष तो निश्चय ही समृद्ध हुआ है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संवत 1375 से 1700 संवत तक का एक लम्बा काल भक्ति या कई आध्यात्मिक रचनाओं से भरा पड़ा है। इसलिए चाहे सामाजिक साहित्यिक प्रवृत्ति को समझें, प्रवृत्ति की बात करें या और यह है भक्ति। एक ही बात रची-बसी है। अतः इस काल को भक्तिकाल कहना सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है।